पंचभूत का महत्त्व

-सौम्या प्रदीप

नाशिक, महाराष्ट्र

अणु डाक-saumyaparvathi@gmail.com

चलभाष-+919987951740

सहसा कलम उठाया मैंने,

सोचकर विलीन हुई।

यह कलम ही न होता,

तो कैसे में लिखती।

तब मन के गहराई से,

आया यह आवाज़।

के ग़र न होता कलम,

तो असम्भव है लेखन काज।

जैसे कलम के बिना ,

अधूरा है काग़ज़।

वैसे पंचभूत के बिना,

अधूरे है हम।

वैसे शरीर भी तो हमारी,

है इन्हीं से उभरी।

माटी से बने हम,

उसी से मिल जाएँगे।

धरा माता प्रसन्न है,

तभी जान में जहान है।

ग़र वो हुई अप्रसन्न,

होगा भूकंप, भूक्षरण, भूस्खलन।

जलाधि जब तक स्थिर है,

तब तक मिलता हमें नीर है।

ग़र वो हुई अस्थिर,

होगा बाढ़, अकाल,सुनामी।

अग्नि माता जब तक उपयोगी है,

तब तक मिलती हमें रोशनी है।

ग़र वो हुई कालरूपी,

होगा ज्वालामुखी व दावाग्नि।

वायु माता जब तक प्रफुल्लित है,

तब तक मिलता हमें हवा है।

ग़र वो हो गयी रुष्ट,

होगा आँधी, तूफ़ान, बवंडर।

व्योम जब तक पूर्ण है,

तब तक मिलता हमें एक छत्र है।

ग़र वो हुई नष्ट,

सब पर होगा महाकष्ट।

कोरोना महामारी के बदौलत,

इन तत्त्वों को मिला ज़रा वक्त।

हो गए वे शुद्ध व स्वच्छ,

और हमें ज्ञात हुआ इक नया सच।